पाठ 2

विनम्रता

● संकलित

आइए, सीखें : जीवन में विनम्रता व बड़ों के प्रति आदर की भावना जाग्रत करना। ♦ विशेषण तथा विशेष्य शब्दों की पहचान।

अपने काम के सिलसिले में शर्माजी से मिलना था। मैं उनके घर की ओर मुड़ा ही था कि देखा शर्माजी का बेटा, विराट अपने संगी-साथियों के साथ खेल रहा है। मैंने उसे आवाज देकर पूछा,''क्या पापा घर पर हैं?''''हाँ,हैं !'' संक्षिप्त उत्तर देकर, बिना मेरी ओर ध्यान दिए वह खेलने में ही व्यस्त रहा। मुझे ही उससे दुबारा कहना पड़ा,''अरे भाई विराट,पापा को मेरे आने की सूचना नहीं दोगे?''''पापा ! आपसे मिलने वीरेन्द्र अंकल आए हैं।'' उसने दरवाजे की तरफ मुँह करके वहीं से चिल्लाकर कहा और अपनी जिम्मेदारी पूरी कर ली। मैं ठगा सा दरवाजे पर ही खड़ा रह गया।

आवाज सुनकर शर्माजी की बेटी विधु दौड़ती हुई आई। मुझे बाहर खड़े देखा। झुककर नमस्कार किया और बोली, ''आइए ! पापा तो आपकी ही प्रतीक्षा कर रहे हैं। आपका भेजा संदेश उन्हे मिल गया था।'' बैठने के बाद अपने मम्मी-पापा को मेरे आने की सूचना दी और विधु मेरे लिए जल ले आई। ''अंकल ! जल लीजिए।''

उसका सहज, सुमधुर और शिष्टाचारपूर्ण कथन सुनकर मन को संतोष हुआ। सोचने लगा विराट पढ़ने में तेज है और अपने नाम की तरह उसका स्वास्थ्य भी अधिक अच्छा है। फिर भी लोगों की प्रशंसा की पात्र विधु ही है। कारण है विनम्रता।

विनम्रता चरित्र का सद्‌गुण है। सुसंस्कृत होने का परिचय-पत्र। यह एक ऐसा चुंबक है जो संपर्क में आने वाले को बरबस अपनी ओर खींच लेता है। विनम्र व्यक्ति की बोली मृदुल, आचरण शिष्ट, तथा भावना निजता से ओतप्रोत होती है।

याद रखना होगा दीनता विनम्रता नहीं होती। दीन याचक होता है, जबकि विनम्र दाता। वह प्यार बाँटता है, जुड़ाव पैदा करता है और मेल-मिलाप की पृष्ठभूमि तैयार करता है। उसके मन में विपरीत विचार

शिक्षण संकेत -

♦ शुद्‌ध उच्चारण का ध्यान रखते हुए पाठ का पठन-पाठन करें-कराएँ। ♦ विद्यार्थियों के उच्चारण पर विशेष ध्यान दें। ♦ 'स''श''क्ष''ष''श्र' आदि वर्णों के उच्चारण के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करें। ♦ जीवन में विनम्रता का महत्व बताएँ।

वालों के साथ भी सामंजस्य बैठाने की धारणा बनी रहती है।

प्रश्न उठता है कि विनीत व्यक्ति को पहचाने कैसे? आगंतुक का प्रसन्नतापूर्वक स्वागत करना,यथोचित सत्कार करने में पीछे न रहना, अपने से बड़ों द्वारा आसन ग्रहण करने पर ही आसन ग्रहण करना,ऐसी प्राथमिक आदतें हैं जो विनीत व्यक्ति की पहचान में सहायता करती हैं। महिला हो या पुरुष,प्रत्येक की गरिमा और भावनाओं का समुचित सम्मान करना विनयी व्यक्ति की विशेषता होती है।

यह सही है कि विनम्रता जब वाणी और व्यवहार में घुली-मिली होगी तभी प्रभाव पैदा करने में सक्षम बनेगी। आदर प्रकट करने में चूक न हो, यह सावधानी उसे अवश्य रखनी होगी। बड़ों के बुलाने पर क्या है, हाँ, अच्छा जैसे शब्दों का प्रयोग अथवा जवाब नहीं देना उचित नहीं माना जाता है। विनम्र व्यक्ति की भाषा में घुली विनम्रता,स्पष्टता और सहजता उसके चरित्र को चमकाने में बहुत प्रभावशाली होती है। इसीलिए जवाब देना ही पर्याप्त नहीं माना गया। बड़ों के पूछने पर या बुलाने पर 'जी हाँ' 'जी आया' कहने का प्रभाव अधिक अच्छा रहता है। किसी की बात का उत्तर ऐसे नहीं देना चाहिए कि सुनने वाले की भावना को ठेस पहुँचे।

विनम्रता केवल बड़ों के प्रति ही नहीं होती है बराबर वालों के प्रति भी समादर और अपने से छोटों के प्रति स्नेह के रूप में भी प्रकट होती है। व्यक्तित्व को आकर्षक बनाने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यदि हमारे लिए कोई कष्ट उठाकर कुछ काम करता है तो हमें उसके प्रति अपनी कृतज्ञता अवश्य प्रकट करनी चाहिए। यदि बस या रेल में कोई व्यक्ति अपनी जगह हमें बैठने के लिए देता है तो उसे धन्यवाद देना कभी न भूलें। ऐसा करते समय लगना भी चाहिए कि हम उसे हृदय से धन्यवाद दे रहे हैं, केवल औपचारिकता का निर्वाह नहीं।

यदि कभी यह अनुभव हो कि जिसके प्रति हम विनीत हैं, वह हमारी उपेक्षा कर रहा है, अथवा हमारी विनम्रता को हमारी कमजोरी समझ रहा है तो अपने स्वाभिमान की रक्षा करते हुए उसे उसकी चेष्टा के प्रति सजग अवश्य करें। पर तब यह भी विचार करें कि आपके व्यवहार में दम्भ तो नहीं। यदि हम दूसरे से विनम्र व्यवहार की अपेक्षा करते हैं तो हमसे वे भी ऐसी अपेक्षा क्यों न करें? ऐसे में हम दूसरों के दुर्गुणों को देखकर स्वंय अपने सद्‌गुणों को ही न छोड़ बैठें।

विनम्रता सफलता की गारंटी भी है। विनम्र कारोबारी का व्यवसाय हमेशा फूलता-फलता है। विनम्रता समस्या समाधान की कुंजी भी है। जिस समाधान को आवेश से भरा व्यक्ति नहीं ढूँढ पाता,उसे विनम्र सहज ही तलाश लेता है।

नदियों से कितना भी पानी समुद्र में क्यों न आ जाए, लेकिन समुद्र में बाढ़ आते देखी है कभी? नदियाँ पानी के साथ-साथ जीव-जन्तु,पत्थर तथा अनेक भारी और मजबूत चीजें भी बहाकर ले आती हैं। पर समुद्र अपनी सीमा में रहकर भी उन सबको अपने में समा लेता है। यह सागर का अपना विनम्र अनुशासन ही तो है।

और पानी? पानी तो जीवन है। समस्त प्रकृति जल से ही पोषित और पल्लवित होती है, तृण, लताएँ, नन्हें पौधों से लेकर बड़े-बड़े वृक्षों तक। लेकिन पानी जब वेगवती नदी के रूप में,तटबंधो को

तोड़कर बाढ़ का रूप धारण कर लेता है,तब उसके सामने जो पेड़ तने रहते हैं , वे बह जाते हैं, ढह जाते हैं। जो झुक जाते हैं, वे पुनः खड़े हो पल्लवित हो जाते हैं। विनम्रता जीवंतता की पोषक है तो अहंकार विनाश का

नए शब्द

शिष्टता = अच्छा व्यवहार। **सद्‌गुण** = अच्छा गुण। **सुसंस्कृत** = अच्छे संस्कार वाला। **मृदुल** = नरम, कोमल **आचरण** = व्यवहार,बर्ताव। **ओतप्रोत** – घुला–मिला, व्याप्त। **पृष्ठभूमि** = आधार। **सामंजस्य** = उचित अनुकूलन, समन्वय। **आगंतुक** = आया हुआ, अतिथि । **समादर** = प्रतिष्ठा, सत्कार

कृतज्ञता = उपकार मानना, अहसान मानना ।

अनुभव विस्तार

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(क) सही जोड़ी बनाइए–

सुसंस्कृत	–	अभिमान
सामंजस्य	–	व्यवहार
दंभ	–	औचित्य
आचरण	–	अच्छे संस्कार वाला

(ख) दिए गए विकल्पों से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

(अ) दीन याचक होता है जबकि विनम्र .....। (पाने वाला,दाता)

(ब) ..... चरित्र का सदगुण है। (विनम्रता, सुन्दरता)

(स) यदि हमारे लिए कोई कष्ट उठाकर काम करता है तो हमें उसके प्रति ..... प्रकट करना चाहिए। (कृतघ्नता, कृतज्ञता)

(द) विनम्रता ..... की पोषक है। (निजता,जीवंतता)

2. अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

(अ) 'विनम्रता' शब्द का अर्थ बताइए।

(ब) 'विधु' के व्यवहार से वीरेन्द्र क्यों प्रभावित हुए?

(स) बड़ों के बुलाने पर किस तरह उत्तर देना चाहिए?

(द) सफलता की गारंटी किसे कहा है?

3. लघु उत्तरीय प्रश्न –

(अ) विराट और विधु के व्यवहार की तुलना कीजिए।

(ब) विनम्र व्यक्ति की पहचान कैसे होती है?

(स) समुद्र में बाढ़ क्यों नहीं आती? स्पष्ट कीजिए।

(द) 'दीन याचक होता है, जबकि विनम्र दाता' इसका आशय स्पष्ट कीजिए।

(इ) विनम्रता कब प्रभाव पैदा करती है?

भाषा की बात–

1. बोलिए और लिखिए –

प्रतीक्षा, प्रशंसा, सुसंस्कृत, पृष्ठभूमि, सामंजस्य, जीवंतता

2. शुद्ध वर्तनी लिखिए–

संक्षीप्त, मर्दुल, विनमरता, व्यक्तित्व, ओपचारिकता

■ **ध्यान से पढ़िए**–

किसी तरह से न बनने वाली बात भी मीठे बोल और विनम्र आचरण से बनाई जा सकती है। स्वयं का आचरण अच्छा नहीं होने पर हम किसी से शिष्ट और उदार व्यवहार की उम्मीद नहीं कर सकते। शिष्ट व्यवहार से हम अपना चरित्र तो निखारते ही हैं, साथ ही सुंदर समाज बनाने में भी भागीदार बनते हैं।

■ **ध्यान दीजिए**–

उपर्युक्त रेखाकिंत शब्दों में विशेषण,विशेष्य शब्दों का प्रयोग हुआ है। बोल,आचरण,व्यवहार और समाज संज्ञा शब्द 'विशेष्य' हैं। इन शब्दों की विशेषता,मीठे,विनम्र,उदार,शिष्ट और सुंदर 'विशेषण' शब्दों से बताई गई है।

3. निम्नलिखित वाक्यों मे से विशेषण और विशेष्य शब्द छाँटिए –

(अ) आद्या शरारती लड़की है।

(ब) बाजार में मीठे आम बिक रहे हैं।

(स) परिश्रमी व्यक्ति सफल होते हैं।

(द) लाल टोपी लेकर आओ।

4. उदाहरण के अनुसार 'ता' प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाइए-

मूल शब्द	प्रत्यय	नया शब्द
विनम्र	ता	विनम्रता
शिष्ट	....	.....
कृतज्ञ	....	.....
सहज	....	.....
आतुर	....	.....

5. पाठ में सु उपसर्ग वाले सुमधुर,सुसंस्कृत आदि शब्द आए हैं। निम्नलिखित शब्दों में 'सु' उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनाइए-

गंध , पुत्र , फल , मुखी , संस्कार , योग

6. निम्नलिखित शब्दों को उनके उचित विलोम से रेखा खींचकर मिलाइए-

उचित	उपेक्षा
औपचारिक	दुर्गुण
अपेक्षा	अनादर
सद्‌गुण	अनुचित
आदर	अनौपचारिक

अब करने की बारी

- जब कभी भी रास्ते में बूढ़े,बीमार,अशक्तजन मिलें,उन्हें सड़क पार करने अथवा गन्तव्य तक पहुँचाने में मदद कीजिए और अपना अनुभव कक्षा में सुनाइए।
- आपके घर परिवार में बुजुर्गों का सम्मान किस प्रकार होता है? लिखिए।